आरती श्रीगुरु श्रीचन्द्र जी की

ओ३म् जय श्री चन्द्र बाबा, स्वामी जय श्री चन्द्र बाबा ।
सुर नर मुनिजन ध्यावत, सन्त सेव्य साहिबा ।।
कलियुग घोर अंधेरा, तुम लियो अवतारा ।
शंकर रूप सदाशिव, यश अपरंपारा ।।
योगी तुम अवधूत सदा हे बाल ब्रह्मचारी ।
भेष उदासी धारे, महिमा अतिभारी ।।
रामदास गुरु अर्जुन सोढ़ी कुल भूषण ।
सेवत चरण तुम्हारे, मिटे सकल दूषण ।।
ऋद्धि सिद्धि के दाता, भक्तन के त्राता ।
रोग शोक को काटे जो शरणी आता ।।
भक्त गिरि संन्यासी चरणां विच गिरयो ।
काट दियो भवबंधन अपना शिष्य कियो ।।
उदासीन जन जग में पालक सकल दुःख घालक ।
तुम आचार्य जगत में सद्गुण संचालक ।।
वेदी वंश रखियो जग भीतर, कृपाकरी भारी ।
धर्म चन्द उपदेशियों, जावां बलिहारी ।।
गौर वर्ण तनु भस्म कान में सजे हुए मदुरा ।
बावरिआं शिर भ्राजें, लख जग सब उघरा ।।
पदमासन को बांधा योग लियो पारो ।
ऐसो ध्यान तुम्हारो, मन में नित धारो ।।
जो जन आरती निशदिन बाबे की गावे ।
बसे जाय बैकुण्ठहि सुख यश फल पावे ।।

विवरण

जिनकी देवता, मुनि एवं मनुष्य सभी ध्यान करते हैं तथा संत लोग जिनकी सेवा करते हैं, ऐसे स्वामी चन्द्र बाबा की जय हो । कलियुग के घोर अन्धकार में

आपने अवतार लिया । शंकर के रूप में आपका सुन्दर रूप बड़ा ही प्यारा लगता है। आपके यश की महिमा अपरंपार है ।

आप योगियों के अवधूत (कम्पित कर देने वाला) हो तथा हमेशा से बाल ब्रह्मचारी हो । आपके उदास भेष में ही आपकी महिमा बड़ी ही भारी है । आप इस संसार रूपी कुल के भूषण हो । आपके चरणों की सेवा करके हमारे सभी दोष मिट जाते हैं । आप हमें सुख एवं सम्पत्ति से युक्त करने वाले हो तथा अपने भक्तों के रक्षक भी हो ।

जो भी आपके शरण में आता है, उसके सभी दुःख-दर्द दूर हो जाते हैं । आपके भक्त एवं सन्यासी जब आपके चरणों के नीचे गिर जाते हैं तो उनके जन्म - मरण रूपी बंधन से छुटकारा दिलाकर अपना शिष्य बना लेते हैं । आप इस जगत के दुःखियों का दुःख दूर कर देते हो एवं उनका पालन करते हो तथा इस संसार को सच्ची शिक्षा देने वाले हो तथा उनमें ज्ञान की ज्योति जगाने वाले हो । हे वेद के वंश! हम पर कृपा कीजिएगा तथा धर्म का उपदेश देनेवाले चन्द्र, हम आप पर बलिहारी जाते हैं ।

आपका गोरा रंग, कानों में भस्म तथा सजी हुई आँखों के साथ बावरिया की तरह सिर पर मँडराते रहते हो तथा सम्पूर्ण जग में अपना प्रकाश फैलाते हो । अपने आसन को बाँधकर तथा मन में आपका ध्यान लगाकर नित्य आपका योग करते हैं। आपकी इस आरती को जो नित्य रूप से गाता है, वह सुख एवं यश को पाकर सीधे स्वर्ग धाम को चला जाता है ।